निप्पन देश की कहानियाँ

२

H
028.5 Se 75 N

कुसुम सेठ

INDIAN INSTITUTE OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY SHIMLA

Rajkamal

राजकमल प्रकाशन

Nippon desh ki kahaniyan

निप्पन देश की कहानियाँ

Kusum Seth

कुसुम सेठ

CATALOGUED

मूल्य : रु० ६.००

© कुसुम सेठ

प्रथम संस्करण : १९७६
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०
८, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली-११०००२
मुद्रक : प्रभात ऑफसेट प्रेस,
कूचा चेलान, दिल्ली
चित्रकार : एस० श्रीकुवाँ

H
028.5
Se75N

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Acc. No. 78447
Date 22.8.92
SIMLA

Library IIAS, Shimla
H 028.5 Se 75 N
00078447

हाना-सोका-फिजीई

सामुराई का बेटा

सारस के पंख और रेशम के धागे

समुद्र खारा कैसे हुआ

कियोटो का दर्पण

सीपी की राजकुमारी

हाना-सोका-फिजीई

[सूखे पौधों को हरा-भरा करनेवाला आदमी]

हजारों वर्ष पहले की बात है। जापान के दक्षिणी द्वीप में एक बूढ़ा किसान अपनी पत्नी के साथ रहता था। दोनों पति-पत्नी बड़े दयालु और नम्र स्वभाव के थे। इनकी कोई सन्तान न थी। मन-बहलाव के लिए उन्होंने एक कुत्ता पाल रखा था। चूंकि यह कुत्ता सफेद रंग का था, अतः वह उसे 'शिरो' (जापानी भाषा में 'शिरो' का अर्थ सफेद रंग है) के नाम से पुकारते थे। दोनों ही शिरो से बहुत प्यार करते थे। यदि किसी कारण से कभी उनके पास कम भोजन होता तो वे स्वयं भूखे रह लेते, पर शिरो को भरपेट खिलाते।

एक दिन की बात है। बूढ़ा-बुढ़िया खाना खाकर आराम कर रहे थे कि शिरो ने लगातार भौंकना शुरू कर दिया। बूढ़े ने सोचा कि अवश्य कोई पक्षी या जानवर उसके पौधों को खराब कर रहा है, तभी शिरो चुप होने का नाम नहीं लेता। वह तुरन्त उठकर बाहर आया। शिरो मालिक को देखकर चुप हो गया और उसका किमोनो (जापानी लिबास) पकड़-कर खींचने लगा। बूढ़ा भी हैरान होकर उसकी इच्छानुसार चुपचाप चलता गया। खेत के एक कोने में लगे पेड़ के पास जाकर शिरो अपने पंजों से जमीन खोदने लगा। बूढ़े की समझ में यह नहीं आ रहा था कि आखिर शिरो चाहता क्या है?

शिरो कभी मालिक की तरफ देखता और फिर पूरे जोर से जमीन खोदने लगता। आखिर बूढ़े की समझ में आ गया कि वह उसे धरती खोदने को कह रहा है। अब वह भागकर घर से बेलचा ले आया और जमीन खोदने लगा।

कुछ देर बाद जमीन से सोने के पुराने सिक्के निकलने लगे। बूढ़े ने जब सब सिक्के निकाल लिये तो पत्नी को बुला लाया। बुढ़िया इतना धन देखकर हैरान रह गयी। फिर दोनों ने सब सिक्के सँभाले और घर ले गये। उनके पीछे-पीछे शिरो खुशी से पूंछ हिलाता हुआ बड़े

S.Okabo

गर्व से सिर उठाये चल रहा था।

बूढ़ा जब जमीन खोद रहा था तो उसका पड़ोसी पेड़ की आड़ से सब-कुछ देख रहा था। दूसरे दिन वह बूढ़े के घर गया और कहने लगा, "कुछ दिनों के लिए हमें अपना शिरो दे दो। हम दोनों पति-पत्नी आजकल अकेलापन महसूस कर रहे हैं।"

बूढ़ा अपने पड़ोसी के कठोर स्वभाव को भली-भाँति जानता था। कई बार शिरो को उन्होंने पीटा भी था। परन्तु वह इन्कार न कर सका और शिरो को उसे देकर बोला, "आप अवश्य ले जाइए, पर इस पर क्रोध न करना और समय पर इसे खाना अवश्य खिला देना।"

पड़ोसी बूढ़ा शिरो को अपने घर ले गया। वह मन-ही-मन प्रसन्न हो रहा था कि अब वह भी इस कुत्ते की सहायता से एक ही दिन में पड़ोसी की तरह धनवान हो जायेगा। वह अपना बेलचा उठाकर कुत्ते को कान से खींचता हुआ अपने खेत के एक पेड़ के पास ले

गया। वहाँ जाकर वह कुत्ते से बार-बार जमीन खोदने के लिए कहने लगा। पर जब कुत्ते ने एक न सुनी तो उसे मारने लगा। मार से बचने के लिए शिरो ने अपने पंजों से जमीन खोदनी शुरू कर दी।

बूढ़े ने सोचा, 'चूँकि शिरो ने जमीन खोदनी शुरू कर दी है, अतः वहाँ धन पैदा हो गया होगा।' अब उसने अपने बेलचे से जल्दी-जल्दी मिट्टी निकालनी शुरू कर दी। परन्तु यह क्या? वहाँ तो सिक्कों के स्थान पर बदबूदार कचरा निकलने लगा! यह देखकर बूढ़े को इतना गुस्सा आया कि उसने शिरो को अपने बेलचे से वहीं खत्म कर दिया और उसी गढ़े में दबा दिया।

उधर बूढ़ा-बुढ़िया शिरो के बिना उदास हो गये। कुछ दिन तो वह इसी इन्तजार में रहे कि माँगने जाना अच्छा नहीं, पड़ोसी स्वयं ही लौटा जायेगा। पर आखिर एक दिन मालिक शिरो को वापस माँगने चला ही गया। और जब उसने कुत्ते की मौत की खबर सुनी तो सन्न रह गया। उसे बहुत दुःख हुआ। भरे हुए हृदय से उसने पड़ोसी से कहा, "जो हुआ सो हुआ! अब कृपा करके उस पेड़ को मुझे दे दो, जिसके नीचे मेरा कुत्ता दफनाया है। मैं अपने कुत्ते की याद में वह पेड़ ही सँभालकर रखूँगा।"

पड़ोसी बूढ़े को कभी हाँ कहने की आदत न थी, पर न जाने उस दिन बूढ़े को पेड़ दे देने की हामी उसने कैसे भर दी।

बूढ़ा पेड़ काटकर घर ले आया। उसने पेड़ की लकड़ी से एक ओखली तैयार की। फिर पत्नी से बोला, "इस ओखली में चावल कूटकर 'मोची' (चावल के केक) बनाओ और अपने शिरो की याद में सबको बाँटो।"

बुढ़िया ने चावल ओखली में डालकर कूटने शुरू किये। थोड़े-से चावलों से ही ओखली भर गयी। उसमें से 'मोची' बनते ही गये, बनते ही गये। और बने भी इतने स्वादिष्ट कि आज तक किसी ने इतने अच्छे 'मोची' नहीं खाये थे।

अब ईर्ष्यालु पड़ोसी की नजर इस ओखली पर गड़ गयी। एक दिन वह बूढ़े के पास आकर बोला, "मुझे और मेरी पत्नी को आपके शिरो की बहुत याद आ रही है। उसे मारकर मैंने भारी गलती की है। उसी के पश्चात्ताप में मैं 'मोची' बनाकर सारे गाँव को खिलाना चाहता

हूँ। आप अपनी ओखली जरा उधार दे दीजिए।"

भोले पति-पत्नी फिर अपने पड़ोसी की बातों में आ गये और ओखली उसे पकड़ा दी। घर लाकर पड़ोसी ने अपनी पत्नी से 'मोची' तैयार करने को कहा। परन्तु यह क्या, इनके घर में तो उसी ओखली से बदबूदार 'मोची' बनने लगे !

पड़ोसी बूढ़े ने गुस्से में आकर ओखली के टुकड़े-टुकड़े कर डाले और उन टुकड़ों से चूल्हा जलाने का काम लेने लगा।

ओखली का मालिक जब ओखली माँगने आया तो क्या देखता है कि उसके पड़ोसी ओखली के टुकड़ों से आग जला रहे हैं। निराश, वह ओखली की राख ही लेकर घर लौट आया।

थोड़ी-सी राख उसने अपने घर के बगीचे में खड़े पेड़ों पर डाल दी। पतझड़ के दिन थे। पेड़ों के सब पत्ते झड़ चुके थे। परन्तु अब अचानक चैरी के पेड़ों पर फूल, सन्तरों के पेड़ों पर सन्तरे लग गये। काकी (जापानी फल) के पेड़ फलों से लद गये। सारा बगीचा बेमौसम बहार से भर उठा।

बगीचे को देखने भीड़ जुट आयी। बात फैलते-फैलते जापान के कोने-कोने में फैल गयी। उन्हीं दिनों एक राजा के बगीचे में चैरी का एक पेड़ सूख रहा था। कई मालियों के प्रयत्न बेकार रहे। आखिर एक दिन उस राजा ने अपने एक सामन्त को उस बूढ़े को बुलाने का आदेश दिया।

सामन्त ने बूढ़े के बगीचे के बारे में सुन तो जरूर रखा था, पर उसे देखकर वह बहुत हैरान हुआ। हर मौसम के फलों-फूलों से बगीचा भरा पड़ा था। उसने बूढ़े का दरवाजा खटखटाया।

बूढ़ा बाहर आया और एक सामन्त को अपने दरवाजे पर देखकर घबरा गया। सामन्त बोला, "ओजीईसाँ! ···(बूढ़े को आदर से पुकारने का ढंग) आपके बगीचे का रंगरूप तारीफ लायक है। हमारे राजा का चैरी का पेड़ सूखता जा रहा है। उसको फिर से हरा-भरा देखने की इच्छा से महाराज ने आपकी सहायता माँगी है। क्या आप मेरे साथ चलने का कष्ट कर सकते हैं?"

बूढ़े ने नम्रतापूर्वक कहा, "गोमेन नासाई (क्षमा कीजिएगा), मैं अच्छी तरह आपका अभिवादन भी न कर पाया। यह तुच्छ व्यक्ति आपकी सेवा में हाजिर है। आप जहाँ भी चलने को कहेंगे मैं तैयार हूँ।"

राजा बूढ़े की प्रतीक्षा में बाहर ही खड़ा था। सामन्त के साथ उसे देखकर बोला, "क्या यह सच है कि तुम्हारे पास ऐसी राख है, जिससे सूखे वृक्ष फिर हरे-भरे हो जाते हैं? पतझड़ में बहार आ जाती है?"

बूढ़े ने कहा, "महाराज, मेरे पास ऐसी राख अवश्य है। आप बतायें कि किस पेड़ को हरा-भरा करने के लिए आपने मुझे बुलाया है? मैं अपनी ओर से कोशिश करूँगा।"

चैरी के सूखे पेड़ के पास जाकर बूढ़े ने अपना किमोनो (जापानी लिबास) अच्छी

तरह ऊँचा करके बाँध लिया। फिर वह पेड़ के ऊपर चढ़ गया और हर टहनी पर थोड़ी-थोड़ी राख छिड़कने लगा। जिस टहनी पर राख पड़ती, वही फूलों से लद जाती! देखते-ही-देखते सूखा पेड़ फूलों से भर गया।

राजा ने प्रसन्न होकर बूढ़े को 'साके' (जापानी शराब) पिलायी और बहुत-सा धन दिया। इसी घटना के बाद बूढ़े का नाम पड़ गया—हाना-सोका-फिजीई, यानी सूखे पौधों को हरा-भरा करनेवाला बूढ़ा!

ईर्ष्यालु पड़ोसी के कानों तक जब बूढ़े की इस करामात की खबर पहुँची, तो वह सोचने लगा कि ओखली की कुछ राख तो उसके घर में भी पड़ी है। फिर क्यों न वह भी पड़ोसी की तरह उससे यश और धन पैदा करे।

यह सोचकर उसने एक टोकरी में राख डाली और गाँव-गाँव में फेरी लगाने लगा, "सूखे पौधों को हरा करवा लो!" एक दिन वह उसी राजा के महल के आगे से आवाज लगाता हुआ गुजर रहा था कि राजा को हाना-सोका-फिजीई की याद आ गयी।

राजा ने उसे बुला भेजा, परन्तु शक्ल देखकर उसे लगा कि यह वह बूढ़ा नहीं है। अतः उससे पूछा, "क्यों, तुम्हीं हो जिसका नाम मैंने हाना-सोका-फिजीई रखा था?"

ईर्ष्यालु पड़ोसी बोला, "हजूर, मैं ही वह बूढ़ा हूँ!"

राजा को अब भी लगा कि यह व्यक्ति झूठा है। अतः झूठ-सच की जाँच-पड़ताल करने के लिए राजा ने उसे अपने बगीचे में खड़े एक सूखे पौधे को हरा-भरा करने को कहा।

ईर्ष्यालु पड़ोसी ने पौधे पर थोड़ी राख डाली। जब कोई असर न हुआ तो और डाली। फिर भी कोई असर न हुआ तो गुस्से में टोकरी ही उसने उस पर फेंक दी। एकदम इतने जोर से फेंकने के कारण कुछ राख उड़कर राजा की आँखों में आ पड़ी।

राजा पहले ही उसके झूठ बोलने पर उससे नाराज़ था। आँखों में राख पड़ते ही उसने उस बूढ़े को क़ैद करने का हुक्म दे दिया। जिन्दगी-भर दूसरों से जलनेवाले बूढ़े को अब जाकर अच्छी सज़ा मिली। उसे उमर-भर के लिए क़ैद कर लिया गया!

सामुराई का बेटा

बहुत दिन पहले की बात है। जापान की प्राचीन राजधानी कियोटो में किनतोकी नाम का एक सामुराई (सैनिक) रहता था। वह एक बहुत सुन्दर लड़की से प्यार करता था। इससे उसके अन्य साथियों को उससे ईर्ष्या हो गयी। पर साथियों के विरोध की परवाह उसने नहीं की और शीघ्र ही अपनी प्रेमिका से विवाह कर लिया। साथी इस बात से और चिढ़ गये और सबने झूठे-सच्चे आरोप लगाकर किनतोकी को दरबार में बदनाम कर दिया। यहाँ तक कि उसे नौकरी से हटा दिया गया। किनतोकी अपने इस अनादर को सहन न कर सका और उसने आत्महत्या कर ली।

किनतोकी की पत्नी उन दिनों बच्चे की माँ बननेवाली थी। कहीं उसके दुश्मन बच्चे को भी न मार डालें, इस डर से वह चुपके-से कियोटो से भाग निकली। भागकर वह आशीगारा नामक पर्वत पर पहुँची और बड़े-बड़े पेड़ों के बीच एक छोटी-सी झोंपड़ी बनाकर रहने लगी। वहीं पर उसके एक लड़का पैदा हुआ। लड़का बहुत खूबसूरत था। माँ ने उसका नाम रखा—'किनतारो' (सुनहरी बच्चा)! बड़ा हुआ तो लगा कि लड़का बहुत ही चुस्त और वीर है। उसके लिए पेड़ों को उखाड़ डालना, भारी पत्थरों को उठा लेना जैसे काम साधारण बात थी। अभी वह किशोर ही था कि माँ ने उसे एक कुल्हाड़ी लेकर दी, जिससे वह जंगल में आनेवाले लकड़हारों की सहायता करता।

चूंकि किनतारो का जन्म जंगल में हुआ और उसके आस-पड़ोस में जानवरों के अलावा और कोई नहीं रहता था, इसलिए उसके मित्र भी जानवर और पक्षी ही थे। वह भालू की पीठ पर सवारी करता, उसके बच्चे के साथ खेलता और हिरणों के साथ दौड़ लगाता। सब जानवर उसे बहुत प्यार करते थे।

金
S.Okubo

एक दिन की बात है कि किनतारो, भालू, बन्दर, हिरण और खरगोश—पाँचों मित्र मिलकर लम्बी सैर के लिए निकल पड़े। पहाड़ों पर ऊपर-नीचे होते हुए वे एक ऐसी घाटी में पहुँच गये, जहाँ खूबसूरत फल और नरम-नरम मखमली घास उग रही थी। सबको वह जगह बहुत पसन्द आयी। अतः वे देर तक वहाँ खेलते रहे। पर जब देखा कि रात होनेवाली है तो किनतारो को अपनी माँ की याद आयी। सुबह से वह घर न लौटा था। माँ खाये-पिये बिना उसकी बाट देख रही होगी, इसलिए उसे जल्दी-से-जल्दी घर पहुँचना चाहिए।

यह सोचकर किनतारो अपने मित्रों से बोला, "देखो भाई, यदि हम उसी रास्ते से लौटे जिससे आये थे, तो घर पहुँचने तक बहुत रात बीत जायेगी। अतः अब छोटे-से-छोटा रास्ता ढूँढ़ना चाहिए।"

कुछ देर तक माथे पर हाथ रखे सभी मित्र घर पहुँचने के किसी छोटे रास्ते पर सोचते रहे। अन्त में उन्हें एक छोटा रास्ता सूझा और वे उसी पर चल पड़े। अभी थोड़ी दूर ही चले थे कि एक गहरी नदी रास्ते में पड़ी। उसका पाट चौड़ा था और पानी की धारा बड़ी तेज थी। भालू, बन्दर, हिरण तथा खरगोश बोले, "भाई किनतारो, बुरे फँसे। आगे बढ़ना तो अब सम्भव नहीं दिखायी देता।"

"इतने में ही घबरा गये भाइयो! ठहरो, मैं अभी तुम लोगों को पार उतारने की व्यवस्था करता हूँ।" यह कहकर किनतारो आस-पास उगे पेड़ों की परीक्षा करने लगा। बड़े ध्यान से उन्हें ऊपर से नीचे तक परखा। आखिर एक ऊँचे और मोटे पेड़ के पास वह रुक गया और इची, नी, साँ (एक, दो, तीन) कहकर झटके से पेड़ को उखाड़ डाला और नदी के ऊपर इस तरह लिटा दिया कि अच्छा-खासा मजबूत पुल तैयार हो गया।

फिर स्वयं सबसे आगे चलते हुए किनतारो ने अपने मित्रों को पीछे-पीछे चलने का संकेत किया।

पर वृक्ष उखाड़कर किनतारो जब पुल तैयार कर रहा था तो पास की एक पहाड़ी चोटी पर खड़ा कोई व्यक्ति उसे देख रहा था। इस बालक की शक्ति देखकर वह चकित रह गया और उसके बारे में और जानकारी प्राप्त करने के लिए वह उसके पीछे हो लिया।

भालू, हिरण, बन्दर और खरगोश सब बारी-बारी से किनतारो को सायोनारा

(विदा) कहकर अपने-अपने घरों को लौट गये। किनतारो भी तेज-तेज डग भरता हुआ अपने घर के सामने जा पहुँचा और माँ को अपने आने की खबर देते हुए बोला, "ओकासाँ, तादाईमाँ!" (माँ मैं लौट आया)।

माँ दौड़ती हुई बाहर आयी और बेटे को गले से लगा लिया। वह व्यक्ति यह दृश्य छिपकर देख रहा था। अब वह उनके सामने आकर बोला, "धन्य हो तुम माँ, जिसने ऐसे वीर बेटे को जन्म दिया। यदि तुम अपने बेटे को राजदरबार में भेज दो, तो यह देश और कुल दोनों का नाम रोशन करेगा।"

किनतारो की माँ ने समझा कि यह आदमी पास-पड़ोस का ही कोई लकड़हारा होगा, क्योंकि पहनावे से तः वह ऐसा ही दिखायी दे रहा था। बोली, "तुम तो जानते ही हो कि राजदरबार में ऊँचे कुल तथा पहुँचवाले लोगों के बच्चों को ही नौकरी मिलती है। हमें-तुम्हें वहाँ कौन पूछता है? इच्छा तो मेरी भी बहुत थी कि मरने से पहले एक बार इसे वीर योद्धा के रूप में देख लूँ।"

वह व्यक्ति बोला, "शायद आपने मुझे पहचाना नहीं। मैं राजदरबार का ही एक खास आदमी हूँ। लकड़हारे के वेष में बहादुर बच्चों की खोज में निकला हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि आपका बेटा राजदरबार में सबसे ऊँचा सेनापति बनेगा। आप मुझ पर भरोसा करके इसे मेरे साथ भेज दें।"

किनतारो की माँ ने हामी भर दी। चलते समय किनतारो बोला, "माँ, मुझे आशीर्वाद दो कि मैं जल्दी ही तुम्हें इस झोंपड़े से निकालकर सुन्दर महल में रख सकूँ।"

माँ का आशीर्वाद पाकर किनतारो उस व्यक्ति के साथ चल दिया। जाने से पहले उसने अपने सब मित्रों से विदा ली। सब जानवरों ने मिलकर उसके उज्ज्वल दिनों की कामना की। विदा होते समय सबकी आँखों में आँसू छलछला आये।

वह व्यक्ति किनतारो को अपने सरदार के पास ले गया। किनतारो को शीघ्र ही सबसे शक्तिवान जत्थे में भर्ती कर लिया गया। कुछ समय तक उसे अन्य साथियों के साथ तरह-तरह के हथियार चलाने की शिक्षा दी गयी। किनतारो अपने सब साथियों से हर कार्य में आगे रहता।

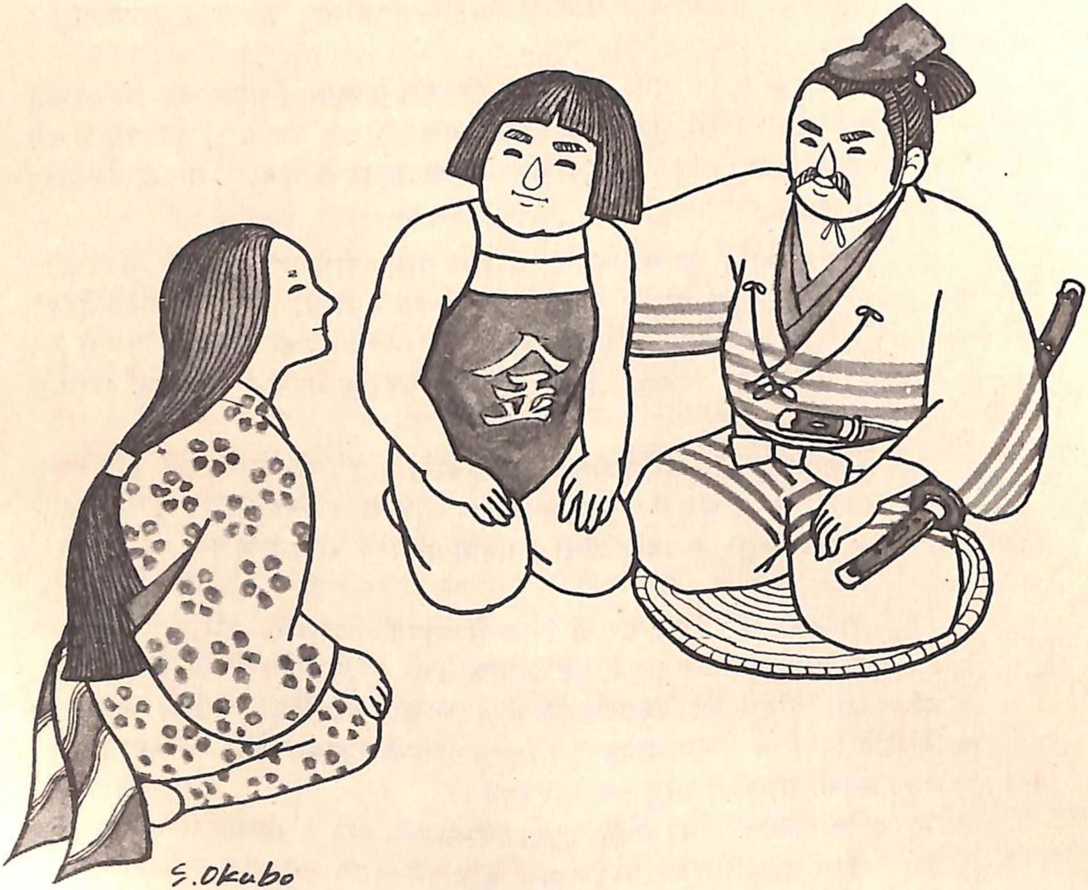
金
S.Okubo

एक दिन की बात है। राजभवन में खबर पहुँची कि उनके राज्य के निकट किसी राक्षस ने डेरा जमाया है। वह धीरे-धीरे सब लोगों को निगल जायेगा। राक्षस के डर से सब व्यक्ति घरों में बन्द हो गये। हर ओर सुनसान दिखायी देने लगा।

किनतारो सबसे अधिक बलवान योद्धा समझा जाता था, इसलिए जनता को राक्षस से बचाने का काम उसे ही सौंपा गया।

किनतारो के लिए यह काम बायें हाथ का खेल था। वह अकेला ही चुपचाप राक्षस के अड्डे पर जा पहुँचा। अचानक किसी को द्वार पर खड़े देखकर राक्षस चौंक पड़ा। पर इससे पहले कि वह सँभल पाये, किनतारो ने तलवार के वार से उसका सिर काट दिया। राक्षस का सिर लेकर वह राजदरबार में लौट आया।

सारे दरबार में किनतारो की जय-जयकार हुई। राज्य-भर में उसकी बहादुरी की चर्चा होने लगी।

किनतारो की बहादुरी से खुश होकर राजा ने उसे अपना प्रधान सेनापति बना लिया।

सेनापति बनने के बाद किनतारो ने सबसे पहले अपनी माँ के लिए एक महल बनवाया और जंगल में जाकर माँ को आदर के साथ शहर ले आया। शहर आकर माँ को अपने पति की और ज्यादा याद आयी। उस पर लगाये गये झूठे आरोपों की याद आयी। पर बेटे की वीरता से मिली खुशी के सामने अब उसके सारे दुःख छोटे थे। सचमुच, कितने ही वर्षों की तपस्या के बाद माँ को अब फिर सुख प्राप्त हुआ था।

सारस के पंख और रेशम के धागे

जापान के किसी गाँव में एक किसान रहता था। वह बहुत गरीब था। उसके पास एक छोटा-सा खेत था। इतना छोटा कि उसमें पैदा होनेवाले चावल से बड़ी मुश्किल से उसका गुजारा हो पाता।

एक दिन वह खेत में हल चला रहा था कि एकाएक वहाँ एक सारस ग्रा गिरा। हल चलाना छोड़ ग्रब वह उस पक्षी को उठाने चला गया। पक्षी के पंख के नीचे एक तीर चुभा हुग्रा था। यह देखकर वह बोला, "सफेद परोंवाले सुन्दर पक्षी, तुम्हें यह चोट किसने पहुँचायी ? इसी तीर के कारण तुम उड़ नहीं पा रहे। लाग्रो, मैं तुम्हारा तीर निकाल दूं।"

दयालु किसान ने बड़ी सावधानी से तीर निकालकर पक्षी के जख्म पर दवाई लगा दी। उसे पानी पिलाया ग्रौर फिर बड़े प्यार से कहा, "देखो पक्षी, ग्रब ध्यान से उड़ना। फिर उस जालिम शिकारी का शिकार न बन जाना।"

पक्षी ने ग्रपने पंख फड़फड़ाये। फिर किसान के सिर पर तीन-चार चक्कर काटकर ग्राकाश में उड़ चला। यह चक्कर शायद उसने किसान को धन्यवाद देने के लिए लगाये थे।

दयालु किसान शाम तक खेत में काम करता रहा। ग्राज वह ग्रौर दिनों से ज्यादा प्रसन्न था, क्योंकि उसने एक पक्षी की जान बचायी थी।

जब वह घर पहुँचा तो क्या देखता है कि उसके दरवाजे पर एक खूबसूरत युवती खड़ी है। वह एक पल के लिए वहीं रुक गया। सोचने लगा, मैं किसी दूसरे के घर में तो नहीं जा पहुँचा।

किसान को इस उधेड़बुन में पड़े देखकर युवती बोली, "आइए ! ये आपका ही घर है और मैं आपकी धर्मपत्नी हूँ । आप खूब थक गये लगते हैं । आइए, मैं आपके हाथ-पाँव धुला दूं । खाना भी तैयार है । आइए, क्या सोच रहे हैं ?"

किसान बोला, "यह तुम क्या कह रही हो ? मुझ-जैसे गरीब से कौन शादी करेगा ? और यदि एक मिनट के लिए मान भी लो कि मुझसे किसी ने शादी कर ली, तो मैं उसे खिलाऊँगा कहाँ से ? मेरे पास कुछ नहीं है । मैं तो कठिनाई से अपना पेट पाल रहा हूँ । अतः तुम जहाँ से आयी हो वहाँ चली जाओ ।"

युवती बोली, "घबराइए नहीं । मैंने सोच-समझकर आपको अपना पति स्वीकार किया है ।" अपनी बगल में रखे एक थैले की ओर संकेत कर उसने फिर कहा, "यह देखिए, मैं अपने लिए चावल भी साथ लायी हूँ ।"

उस दिन के बाद किसान को कभी भी चावलों की कमी नहीं हुई । चावलों का वह थैला ही ऐसा था कि उन्हें जितने चावलों की जरूरत होती, वे उसमें से उतना निकाल लेते । वह कभी खाली ही नहीं होता था !

एक दिन युवती ने किसान से कहा, "स्वामी, मुझे एक कपड़ा बुननेवाली छोटी-सी मशीन खरीद दीजिए ।"

किसान कुछ रकम उधार लेकर शहर से कपड़ा बुननेवाली एक मशीन खरीद लाया ।

युवती ने वह मशीन अपने घर के एक कोने में रखवा ली और उसके चारों ओर पर्दा लगवा दिया । अगले दिन वह अपने पति से बोली, "देखिए, मैं सात दिन के लिए इन पर्दों के पीछे रहूँगी । कृपया इसमें झाँकने का प्रयत्न मत करना ।"

अगले सात दिन तक किसान मशीन चलने की आवाज सुनता रहा । कई बार उसके मन में अपनी सुन्दर पत्नी को काम करते हुए देखने की इच्छा भी हुई, पर उसे उसके साथ किये गये वायदे की भी याद बनी रही । हर बार वह अपनी इच्छा को दबाकर रह गया ।

ठीक सात दिन बाद युवती रेशमी कपड़े का एक सुन्दर थान हाथ में लेकर पति से बोली, "यह लीजिए और इसे शहर में बेच आइए । आपको इसके कम-से-कम १०० येन (जापानी सिक्के) मिलेंगे ।"

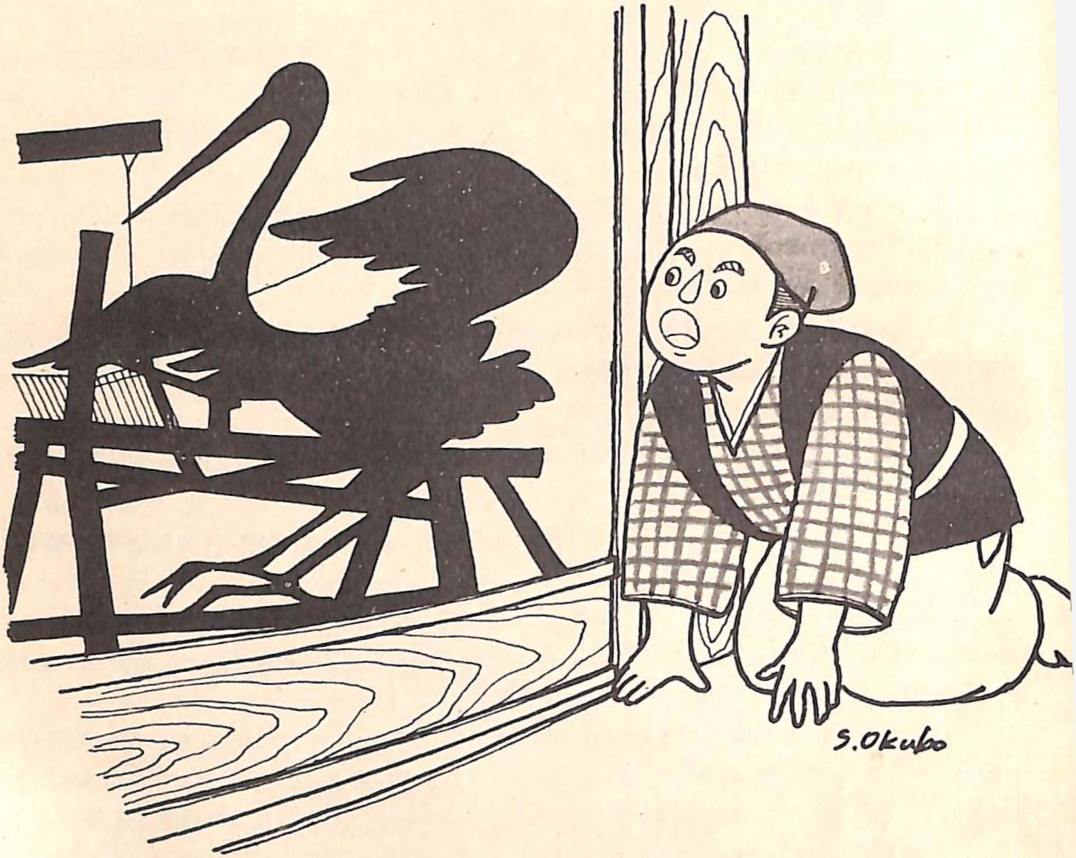
S.Okubo

कपड़ा लेकर जब वह शहर गया तो सब व्यापारी कपड़े को देखकर चकित रह गये। सभी उसे खरीदने के लिए अधिक-से-अधिक पैसा देने लगे। आखिर १५० येन में थान बेचकर वह खुशी-खुशी घर लौट आया।

कुछ दिन बाद युवती फिर पति को पर्दे के पीछे झाँकने से मना कर सात दिन के लिए अपने काम में जुट गयी।

बड़ी कठिनाई से किसान ने तीन रोज तो अपने मन को रोके रखा पर चौथे दिन पत्नी को देखने की इच्छा इतनी प्रबल हो उठी कि लाख कोशिश करने पर भी वह अपने-आपको न रोक सका।

उसने अपने-आपसे कहा, 'मैं अन्दर थोड़े ही जाऊँगा। एक कोने से थोड़ा-सा पर्दा उठाकर केवल यही देखूंगा कि बिना सूत और रेशम के मेरी पत्नी कपड़ा कैसे बुन रही है!'

यही सोचकर कि इतना-सा देखने से उसकी पत्नी को पता भी न चलेगा, उसने जरा-सा पर्दा उठाकर देखा। पर यह क्या, वहाँ उसकी पत्नी तो थी ही नहीं! हाँ, एक सफेद सुन्दर पंखोंवाला सारस अपने पंखों से ही कपड़ा बुन रहा था।

सारस ने किसान को अन्दर झाँकते हुए देख लिया। वह बोला, "मैं वही सारस हूँ, जिसके पंखों से आपने तीर निकाला था। मैं ही आपकी पत्नी का रूप धारण कर आपके उपकार का बदला चुकाना चाहता था। अब चूंकि आपको पता चल गया है कि आपकी पत्नी वास्तव में एक पक्षी है, तो मैं यहाँ नहीं ठहर सकता। अब आप मेरे इस अधबुने कपड़े को ही याद के लिए सँभालकर रख लें।"

इतना कहकर सारस ने अपने सुन्दर पंख समेटे और आकाश में उड़ गया। बेचारा किसान मुंह उठाये उसकी ओर देखता रह गया।

समुद्र खारा कैसे हुआ

बहुत दिनों पहले जापान के एक गाँव में दो भाई रहते थे। बड़ा भाई चाहता था कि किसी तरह छोटे भाई को कहीं और भेज दे और स्वयं सारी जमीन का मालिक बन जाये। यही सोचकर उसने छोटे भाई की शादी दूर के एक गाँव की लड़की से कर दी। छोटा भाई उसी गाँव में एक छोटा-सा मकान लेकर रहने लगा।

छोटे भाई की पत्नी के गाँव में एक वर्ष बारिश न हुई। इसलिए वह अपने खेतों से जरूरत-भर चावल नहीं उगा सका। नये वर्ष का उत्सव मनाने के लिए वह अपने बड़े भाई से चावल माँगने आया। बोला, "ओनीसाँ (बड़े भाई को आदर से पुकारने का जापानी शब्द), इस वर्ष हमारे खेत से जो चावल पैदा हुए वे हमारे लिए काफी नहीं रहे। अब हमारे घर में चावल का एक भी दाना नहीं है। नये वर्ष का 'मोची' (चावल का केक) बनाने के लिए आप हमें कुछ चावल दे दीजिए।" यह सुनकर बड़ा भाई बोला, "चावल माँगते तुम्हें शर्म आनी चाहिए! जब विवाह करते हैं तो वचन दिया जाता है कि पत्नी की सब जरूरतें खुद पूरी करेंगे। और तुम पत्नी की पेट-पूजा के लिए भी कुछ पैदा नहीं कर पाये!"

छोटा भाई बड़े भाई की बातों से लज्जित होकर जंगल की ओर चल पड़ा। दूर एक पहाड़ी जंगल में एक बूढ़ा लकड़ी चुन रहा था। इस युवक को देखकर वह बोला, "ऐ छोकरे, यहाँ क्या करने आये हो?"

छोटे भाई ने बड़े आदर से बूढ़े को सिर झुकाया और कहा, "ओजीसाँ, कोनीचिवा (बड़े चाचा नमस्कार), मैं आज बहुत मुश्किल में हूँ। नया वर्ष आ रहा है और हमारे घर में चावल का एक भी दाना नहीं है। 'मोची' तक नहीं बन सकेगी। मैं पत्नी से यह कहकर निकला था कि बड़े भाई से चावल माँगने जा रहा हूँ, पर भाई ने चावल देने से साफ मना कर दिया। अब

निराश होकर इस ओर भटक आया हूँ ।"

बूढ़े सज्जन ने युवक को जौ की बनी हुई दो रोटियाँ दीं और कहा, "यह लेकर तुम पहाड़ की चोटी पर बने मन्दिर के पिछवाड़े चले जाओ । वहाँ कुछ बौने रहते हैं । उन्हें जौ की रोटी बहुत अच्छी लगती है, अतः वह तुम्हें इनके बदले कुछ भी देने को तैयार हो जायेंगे । पर बदले में तुम धन न लेना और केवल पत्थर की ओखली लेने का आग्रह करना ।"

छोटा भाई जौ की रोटियाँ लेकर मन्दिर के पिछवाड़े जा पहुँचा । वहाँ कुछ बौने एक बड़ी लकड़ी को अपने मकान के अन्दर ले जाने में व्यस्त थे । युवक ने लकड़ी उठाकर अन्दर रख दी । बौने बहुत खुश हुए । इतने में ही एक बौने की नजर जौ की रोटियों पर पड़ गयी । इन रोटियों के बदले वे युवक को सोने की ईंटें तक देने को तैयार हो गये । इस पर युवक ने

कहा, "मैं यह रोटियाँ आपको तभी दूँगा यदि आप मुझे पत्थर की ओखली देंगे।" बौने आखिर इस सौदे के लिए भी तैयार हो गये।

युवक पत्थर की ओखली लेकर वापस लौटा। उसने देखा कि वह वृद्ध अभी तक वहाँ लकड़ियाँ चुन रहा है। वृद्ध ने भी युवक को देखा और उसके हाथ में ओखली देखकर बोला,

"बेटा, इधर आओ। तुम्हें इसका प्रयोग करना भी सिखा दूँ। इस ओखली को दायीं तरफ घुमाकर जो माँगना हो माँग लेना। यह सब-कुछ देगी। पर जौ की रोटी न माँगना। और जब तुम अपनी जरूरत-भर एक चीज ले चुको तो इसे बायीं ओर घुमा देना। ओखली चीजें देना बन्द कर देगी।"

युवक ने वृद्ध सज्जन को धन्यवाद दिया और खुशी-खुशी घर लौट चला।

इधर पत्नी इतनी देर तक पति के घर न लौटने पर दुखी हो रही थी, 'आज नये वर्ष की रात है। अभी तक वह लौटे नहीं। 'मोची' कहाँ से तैयार करूँ ?'

इस प्रकार वह मन-ही-मन खीज रही थी। इतने में क्या देखती है कि पति घर आ रहे हैं। पर उसके हाथ में तो केवल पत्थर की ओखली दिखायी दे रही है। चावल तो कहीं दिखते ही नहीं! वह और भी जल-भुन गयी और जैसे ही पति अन्दर घुसा, वह उस पर बरस पड़ी।

पति ने धीरे-से ओखली को नीचे रखकर कहा, "मेरी रानी, क्रोध क्यों करती हो! तुम्हें चावल चाहिए, तो यह लो।" इतना कहकर जब उसने ओखली को दायीं ओर घुमाया तो चावल ही चावल—इतने कि अच्छा-खासा ढेर लग गया।

पत्नी बोली, "बस करो! इतना सँभालूँगी कहाँ ?"

युवक ने ओखली को बायीं ओर घुमा दिया। इसके बाद उसने ओखली को फिर दायीं ओर घुमाया और उत्तम मछली माँगी। पाँच-छः बड़ी-बड़ी मछलियाँ उसे तुरन्त मिल गयीं। अब फिर उसने ओखली को बायीं ओर घुमाकर छोड़ दिया।

घर भरा-पूरा हो गया और नये वर्ष की रात्रि खूब आनन्द से बीत गयी। इसी ओखली की सहायता से उसने अपने रहने के लिए नया मकान प्राप्त किया। फिर एक दिन अपने बड़े भाई तथा सब गाँववालों को दावत पर बुलाया।

बड़ा भाई छोटे भाई का मकान देखकर दंग रह गया। वह सोचने लगा, 'कुछ दिन पहले तो यह मुझसे चावल माँगने आया था और आज सैकड़ों व्यक्तियों को दावत दे रहा है! हो न हो इसमें जरूर कुछ रहस्य है!' वह अपने भाई की प्रत्येक हरकत पर नजर रखे हुए था।

भोजन का समय हुआ। छोटा भाई अन्दर गया और ओखली निकालकर तरह-तरह

के खाने सजाने लगा। बाहर नाना प्रकार के मांस, मछलियाँ, तरकारियाँ तथा 'साके' (जापानी शराब) परोस दिये गये। सब लोगों ने जी भरकर खाना खाया और साके पी।

सब लोग खुशी-खुशी अपने-अपने घर चले गये, परन्तु बड़ा भाई छोटे भाई के घर ठहर गया। रात को जब छोटा भाई और उसकी पत्नी सो गये तो बड़ा भाई चुपके-से उठा और ओखली तथा बची हुई 'मोची' उठाकर चलता बना।

पकड़े जाने के डर से वह सीधा अपने घर नहीं गया बल्कि एक नौका पर सवार होकर किसी दूर स्थान पर जा निकला।

रास्ते में जब भूख लगी तो 'मोची' खाने लगा। मोची खाते-खाते उसका मन हुआ कि चुटकी-भर नमक से मुँह नमकीन किया जाये।

यह सोचकर उसने झट से ओखली निकाली और उसे दायीं ओर घुमाकर नमक माँगा। ओखली नमक देने लगी। पर ओखली से अब नमक निकलता ही जा रहा था। बड़े भाई को ओखली बन्द करने का ढंग नहीं आता था। अतः नमक निकलता ही गया। नाव नमक से भर गयी और अन्त में ओखली नाव समेत समुद्र में डूब गयी। साथ ही डूब गया बड़ा भाई। कहते हैं, वह ओखली अभी तक नमक दिये जा रही है। इसी कारण समुद्र का पानी खारा है।

कियोटो का दर्पण

आज से करीब हजार साल पहले कियोटो नगर से बहुत दूर एक छोटे-से गाँव में एक परिवार रहता था। परिवार में अभी सिर्फ पति-पत्नी ही थे। दोनों का आपस में बहुत स्नेह था। पत्नी सदा पति की सेवा के लिए तैयार रहती थी और पति भी हमेशा यही चाहता था कि वह अपनी पत्नी की हर इच्छा पूरी करे। विवाह के एक वर्ष बाद उनके घर में एक कन्या ने जन्म लिया। बेटी को पाकर दोनों बहुत खुश हुए।

कन्या के होने से उनके घर में हर समय चहल-पहल रहने लगी। बच्ची की हर बात में माता-पिता को बहुत आनन्द आता। बच्ची को लेकर वे कभी किसी मन्दिर में जाते तो कभी किसी उद्यान में। कभी बच्ची के लिए तरह-तरह के खिलौने खरीदे जाते तो कभी रंग-बिरंगी किमोनो (कपड़े) तैयार किये जाते। इस तरह यह छोटा-सा परिवार सदा प्रसन्न और व्यस्त रहता।

एक दिन सुबह कियोटो से व्यक्ति के नाम राजा का सन्देश आया। राजा ने उसे दरबार में हाजिर होने को कहा था। सन्देश पाते ही परिवार में गहरी चिन्ता छा गयी। आज तक पति-पत्नी एक दिन के लिए भी अलग न हुए थे। अब न जाने कब तक दोनों को एक-दूसरे से अलग रहना होगा। उन दिनों आज की तरह तेज चलनेवाली गाड़ियाँ या मोटरें तो थी नहीं। अतः पैदल ही लम्बा सफर तय करना पड़ता था। चूँकि राजा का हुक्म था, इसलिए जाना भी जरूरी था।

जाने से पहले पति अपनी पत्नी से बोला, "मेरी अनुपस्थिति में बच्ची का पूरा-पूरा ध्यान रखना। इसे कोई कष्ट न होने पाये। मैं जल्दी से जल्दी लौटने का प्रयास करूँगा।"

पत्नी की आँखों में आँसू आ गये। पर किसी तरह आँसुओं को छिपाने का प्रयास करती हुई बोली, "आप हमारी चिन्ता न करें। इतने लम्बे सफर में अपना हर तरह से ख्याल

रखिए। मैं आपको सुरक्षा के लिए भगवान से प्रार्थना करूँगी।"

बच्ची इस बीच कभी बाप को और कभी माँ के मुँह को निहारती रही। वह हैरान थी।

बेटी को प्यार करते हुए पिता बोला, "देखो, मैं दूर जा रहा हूँ। कुछ दिन तुम अकेली माँ के पास रहोगी। माँ को तंग नहीं करना। मैं तुम्हारे लिए खिलौने लाऊँगा।"

बच्ची खिलौनों का नाम सुनते ही खुश होकर कहने लगी, "मैं बहुत अच्छी बेटी बनकर रहूँगी, तुम फिर मेरे लिए बहुत-से खिलौने लाना भूलना नहीं।"

इस प्रकार बेटी और पत्नी से विदा लेकर वह कियोटो के लिए चल पड़ा। जब तक वह अपनी बेटी की झलक देख सकता था, बार-बार पीछे मुड़कर देखता रहा। पत्नी और बेटी भी तब तक द्वार के बाहर खड़ी रहीं जब तक कि वह आँखों से ओझल न हो गया।

पति की अनुपस्थिति में स्त्री ने रुई कातकर सर्दियों के कपड़े तैयार किये।

बच्ची रोज पिता के लौटने और नये-नये खिलौने प्राप्त करने का इन्तजार करने लगी। हर रोज़ माँ से पूछती, "अब ओतोसाँ (बापू) कब लौटेंगे ? मेरे लिए क्या लायेंगे ? माँ तुम ओतोसाँ को जरूर बताना कि मैं कितनी अच्छी लड़की बनकर रही हूँ।"

माँ जवाब में हर रोज़ यही कहती, "बेटी, तुम अपने पिता के सकुशल लौट आने की कामना करो। वे शहर से तुम्हारे लिए बढ़िया गुड़िया लायेंगे।"

आखिर, लगभग एक वर्ष बाद इस नन्हे-से परिवार में फिर खुशी का दिन आया। दोनों हाथों में उपहार लिये दरवाजे के भीतर पैर रखते हुए वह व्यक्ति बोला, "बेटी, देखो कौन आया है ?"

माँ-बेटी आवाज पहचानकर भागती हुई बाहर आयीं। लम्बी यात्रा की थकान के कारण उस व्यक्ति को पहचानना कठिन हो रहा था। रास्ते में कई तरह की कठिनाइयों तथा सर्दी, गर्मी के कारण उस व्यक्ति का रंग साँवला तथा शरीर दुबला हो गया था।

बेटी बाप को देखते हुए बोल उठी, "ओतोसाँ, माँ से पूछ लो, मैं बहुत अच्छी बेटी बनकर रही हूँ। माँ के कामों में उसका हाथ भी बटाती थी। अब तो मुझे खिलौने दोगे न ?"

बाप ने बेटी को प्यार से बाँहों में ले लिया। पर बेटी को तो खिलौने पाने की जल्दी थी। वह झट से बाप की गोद से निकलकर अपना उपहार माँगने लगी।

S.Okabo

बाप ने रेशम के सुन्दर रूमाल को खोलकर उसमें से एक खूबसूरत गुड़िया बेटी को दी।

बेटी अब गुड़िया पाकर उसी में लीन हो गयी। उसके पास पहले भी कई प्रकार की गुड़ियाँ थीं पर कियोटो जैसी सुन्दर गुड़िया उस गाँव में नहीं मिलती थी।

अब उस व्यक्ति ने रेशम के रूमाल में बँधा दूसरा उपहार खोला और पत्नी से कहा, "देखो, तुम्हारे लिए क्या नयी चीज लाया हूँ।"

पत्नी ने डिब्बा खोलकर देखा तो एक गोल लकड़ी पर खूबसूरत फूलों के चित्र बने देखे। वह बोली, "वाह! कितनी कारीगरी का काम है यह! फूल तो असली फूलों जैसे ही दिखायी देते हैं!"

पति बोला, "जरा दूसरी तरफ भी तो देखो।" और पत्नी ने जैसे ही दूसरी तरफ देखा तो भयभीत हो गयी कि पतिदेव यह कौन-सी नयी औरत ले आये!

पत्नी की यह हालत पति फौरन ताड़ गया। बोला, "मेरी भोली पत्नी, यह है दर्पण—आईना! शहर में हर औरत के पास दर्पण होता है। इसे जो भी देखता है उसे अपनी ही सूरत इसमें दिखायी देती है। दर्पण में तुम जिसको देख रही हो, वह तुम स्वयं ही हो! अच्छा, अब तुम ही बताओ कि मैं जो कहता था कि मेरी पत्नी दुनिया में सबसे खूबसूरत है, वह सच है या नहीं?"

पत्नी इस अनोखे उपहार को पाकर बेहद खुश हुई। उसने दर्पण को खूब सँभालकर रख लिया।

दिन बीतते गये। पर एक दिन फिर इस सुखी परिवार पर चिन्ता के बादल छा गये। पत्नी को एक ऐसे रोग ने आ घेरा कि सारी दवाइयाँ बे-असर होती रहीं। आखिर अपनी मृत्यु निकट आयी जान पत्नी ने बेटी को पास बुलाकर कहा, "बेटी, मुझे शायद अब कोई भी डाक्टर न बचा पाये। अतः तुम मेरे मरने के बाद ध्यान से रहना। बाप की आज्ञा का पालन करना। घर के काम-काज को खुद करने की कोशिश करना। मुझे पूरा भरोसा है कि तुम कुछ ही दिनों में सब सीख जाओगी। हाँ, एक बात याद आयी, मेरे सन्दूक में एक डिब्बा पड़ा है। वह ध्यान से निकाल लाओ। देखो, गिरे नहीं।"

बेटी ने डिब्बा लाकर माँ को दे दिया। माँ बोली, "देखो, जब तुम्हें मेरी याद आये, तो तुम इसे खोलकर इसके सफेद भाग में देखना, मैं तुम्हें सामने दिखायी दूँगी।"

वही हुआ, जिसका डर था। माँ की मृत्यु हो गयी। बाप-बेटी दोनों को जैसे रोने के सिवाय कोई काम ही न रहा। आखिर बेटी को माँ के अन्तिम शब्दों की याद आयी, 'बेटी, मेरे मरने के पश्चात् ध्यान से रहना।' वह बाप से बोली, "माँ हमें रोने के लिए मना कर गयी थी। हमें रोना नहीं है। मिलकर सब काम करने हैं। चलिए, आप मुझे बताइए कि मैं क्या करूँ?"

छोटी-सी बच्ची के मुँह से इतना सुनते ही बाप को भी होश आया। जानेवाली तो चली गयी, अब तो उसे और भी अधिक जिम्मेदारी सँभालनी होगी। अब वह सदा की भाँति फिर अपने काम में जुट गया।

बेटी भी कुछ ही दिनों में घर का बोझ सँभालने लायक बन गयी। परन्तु बेटी को काम करते देख बाप के दिल पर सदा चोट लगती। जिस बेटी को माँ के रहते फूलों की तरह पाला जा रहा था, वही माँ के बिना इस छोटी-सी आयु में घर के कामों में फँस गयी है।

अतः एक दिन उसने एक ऐसी लड़की से शादी कर ली, जिसने उसकी बेटी को प्यार से रखने का वचन दिया।

इधर बेटी ने भी बाप की इच्छानुसार सौतेली माँ को असली माँ की तरह समझा। वह कभी ऐसा काम करने की कोशिश न करती, जिससे नयी माँ को शिकायत हो।

परन्तु सौतेली माँ के अन्दर सौतेलापन पनप रहा था। वह बात-बात में बेटी से चिढ़ जाती। थोड़े दिन बाद वह पति से उसकी झूठी-सच्ची चुगली करने लगी।

पति हमेशा बेटी की तारीफ कर पत्नी को झाड़ देता। इसका नतीजा यह हुआ कि उसे बेटी के प्रति और भी अधिक चिढ़ हो गयी। वह उसके हर काम पर कड़ी नजर रखने लगी।

बेटी अपनी तरफ से पूरी कोशिश करती कि नयी माँ को खुश रख सके। परन्तु जब बहुत निराश हो जाती तो वह माँ के दिये हुए डिब्बे को उठा लेती और उसके दर्पणवाले हिस्से में देखकर माँ से बातें करती। चूँकि उसकी अपनी शक्ल बिल्कुल माँ से मिलती थी, इसलिए वह समझती कि सचमुच माँ ही उसके सामने खड़ी हुई है।

एक दिन नयी माँ ने उसे इसी तरह किसी चित्र से बातें करते सुन लिया। वह समझी कि बेटी उसी की मौत माँगने के लिए किसी चित्र से बातें कर रही है। लोगों में यह विश्वास था कि जब किसी का बुरा चाहना हो तो उसके बारे में किसी चित्र से बातें करने से अवश्य ही उसकी मौत हो जाती है।

अब नयी माँ को पति से शिकायत करने का एक और अवसर हाथ आ गया। उसने पति से वह सब बता दिया जो उसने अपनी आँखों से देखा था। फिर उसे बेटी के कमरे की ओर ले गयी, ताकि वह अपनी आँखों से बेटी की करतूत देखे।

पिता ने बेटी के कमरे का कागजी द्वार हटाया और अन्दर घुस गया। अचानक बाप को अन्दर आया देख बेटी डर गयी। और शीशे को अपने किमोनो (पोशाक) के लम्बे बाजू में छिपा लिया।

बाप ने बेटी को कुछ छिपाते हुए देखकर कड़ाई से कहा, "क्या छिपाया है? मुझे उम्मीद नहीं थी कि मेरी बेटी इतनी जल्दी बदल जायेगी। तुम्हारी माँ का कहना ठीक ही लगता है कि तुम किसी चित्र से बातें कर उसकी मौत माँग रही हो। दिखाओ, क्या छिपाया है?"

बेटी ने आज तक अपने बाप की ऐसी कठोर आवाज न सुनी थी। वह बुरी तरह डर गयी। माँ के दिये गये उपहार को बाप को दिखाने में उसे कुछ हिचकिचाहट हो रही थी, पर अपने ऊपर झूठा आरोप लगते देख उसने शीशा निकालकर बाप के सामने रख दिया और मरने से पहले माँ के कहे शब्द भी दोहरा दिये।

बाप ने शीशा हाथ में लेकर कहा, "भोली बेटी, यह वही शीशा है जो दो वर्ष पहले मैंने कियोटो से तेरी माँ को लाकर दिया था। इसमें तुम्हें तुम्हारी माँ की नहीं, बल्कि तुम्हारी ही शक्ल दिखायी देती है।" यह कहते-कहते उसकी आँखें भर आयीं। छलक आये आँसुओं को पोंछकर वह फिर बोला, "आज मैंने कितना बड़ा पाप किया है। अपनी नादान बच्ची पर ऐसे ही शक कर बैठा। मुझे क्या मालूम था कि माँ मरते समय भी बच्ची को हमेशा सीधे रास्ते पर चलने का ऐसा उपाय बता गयी थी। बेटी, मुझे क्षमा करना।"

S.Okubo

उधर नयी माँ भी यह सोचकर कि देखूँ बाप-वेटी में क्या बातचीत होती है, दरवाजे पर कान लगाये सब सुन रही थी। अब नयी माँ वहाँ खड़ी न रह पायी और अपने आपको कोसने लगी। पश्चात्ताप के लिए वह पति के चरणों में आकर गिर गयी और बार-बार क्षमा माँगने लगी।

बेटी और पति दोनों ने उसे स्नेह से उठाया। वह रोते हुए बोली, "बेटी, मैं आज से वायदा करती हूँ कि तुम पर कभी सन्देह नहीं करूँगी। आज से मैं तुम्हें अपनी जाई बेटी ही समझूँगी। उम्मीद है तुम भी अपनी माँ पर दया करके बीती बातों को भूल जाओगी।"

उस दिन के बाद यह छोटा-सा परिवार फिर सुखपूर्वक रहने लगा। सब लोगों के मुँह से यही सुनने को मिलता कि यदि सौतेली माँ और सौतेली बेटी का प्यार देखना हो तो इस परिवार में देखो।

सीपी की राजकुमारी

वर्षों पहले जापान के पश्चिमी तट पर एक गाँव में शजीरा नामक मछुआ रहता था। शजीरा तब छोटा ही था जब उसके बाप की मृत्यु हो गयी थी। इसलिए माँ की देखभाल का भार छोटे-से शजीरा के कन्धों पर ही आ पड़ा।

शजीरा सभी गाँववालों की तरह सूरज निकलने से पहले ही जाल लेकर समुद्र की ओर चल देता। पर न जाने वह क्यों दिन-भर उतनी ही मछलियाँ पकड़ पाता जिनसे माँ-बेटे की गुजर कठिनाई से हो पाती। इसलिए वह गाँव में सबसे ज्यादा गरीब था। परन्तु दिल का कतई छोटा न था। माँ की सेवा करना वह अपना परम कर्तव्य समझता था। माँ भी बड़े दयालु स्वभाव की थी। उनके द्वार पर कोई भी आता, कभी खाली हाथ न लौटता। सबकी सहायता के लिए माँ-बेटा सदा तैयार रहते।

एक दिन की बात है। शजीरा रोज की तरह सवेरे-सवेरे जाल लेकर मछलियाँ पकड़ने गया। परन्तु उस दिन दोपहर के भोजन तक वह एक भी मछली न पकड़ सका। बहुत दुखी हो रहा था, क्योंकि घर पर कुछ भी तो नहीं था।

'तो क्या माँ को आज उपवास ही करना पड़ेगा? नहीं।...माँ के लिए कम-से-कम एक मछली तो अवश्य ही पकड़नी होगी।' अपने आपसे इसी प्रकार बातें करता शजीरा समुद्र में कुछ दूर निकल गया।

थोड़ी देर बाद जाल कुछ भारी-भारी लगा। खुशी से शजीरा ने जाल को जल्दी-जल्दी बाहर खींच लिया, पर जाल में मछली के बजाय एक सीपी को देखकर वह उदास हो गया।

माँ का चेहरा उसकी आँखों के सामने घूम गया। दुखी होकर वह बोल उठा, "हे भगवान्, क्या आज उसकी बूढ़ी माँ को कुछ भी खाने को न मिलेगा! नहीं, नहीं, मैं ऐसा कभी नहीं होने दूँगा। इसी सीपी का सूप बनाकर पिलाऊँगा।" इतने में क्या देखता है कि सीपी आकार में बड़ी होती जा रही है। एकटक वह उसी को देखता रहा। अचानक सीपी का पेट खुल गया और उसमें से इतना प्रकाश निकला कि शजीरा की आँखें चौंधिया गयीं। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। आँखों को एक बार बन्द कर जब पुनः उसने उन्हें खोला तो देखा कि सीपी में एक अत्यन्त सुन्दर लड़की बैठी है। काँपता हुआ, हाथ जोड़कर शजीरा बोला, "देवी, क्या आप इस समुद्र की राजकुमारी हैं? यदि मुझसे कोई गलती हो गयी है, तो मुझे माफ कर दो।"

कन्या बोली, "मैं नहीं जानती, मैं कौन हूँ और कैसे यहाँ पहुँच गयी हूँ। न मेरा घर है, न घाट। इसलिए अब मुझे अपने घर ही ले चलो।"

शजीरा अभी तक भय से काँप रहा था। वह बोला, "मैं बहुत गरीब हूँ। मेरी टूटी-फूटी झोंपड़ी में आप जैसी नाजुक कुमारी नहीं रह पायेंगी। सो आप अपने घर ही लौट जायें तो अच्छा है।"

लड़की बोली, "मैं आपको बता तो रही हूँ कि मेरा कोई घर-बार नहीं है। यदि है तो मुझे मालूम नहीं। सो मैं आपके घर ही रहूँगी।"

शजीरा बार-बार उस सुन्दर बाला से अपने टूटे-फूटे घर में न चलने की प्रार्थना करता रहा, पर लड़की ने एक नहीं सुनी। आखिर शजीरा को ही हार माननी पड़ी।

शजीरा ने लड़की की सारी कहानी माँ से जा सुनायी। माँ ने लड़की से कहा, "बेटी, इस घर में चाहे धन की कमी हो, सेवा और आदर की कमी नहीं। तुम जब तक चाहो खुशी से यहाँ रहो। मैं और मेरा बेटा तुम्हें हर तरह सुखी रखने का पूरा-पूरा प्रयास करेंगे।"

उधर गाँववालों ने शजीरा के साथ एक रूपवती कन्या को उसके घर जाते देख लिया था। अब सारे गाँव में इस सुन्दरी की चर्चा होने लगी। सब लोग बारी-बारी से उसे देखने आने लगे।

S. Okubo

कोई कहता, आकाश की अप्सरा है तो कोई सीपी की राजकुमारी बताता। जापानी रिवाज के अनुसार सभी कोई-न-कोई भेंट लेकर शजीरा के घर आ रहे थे। घर में चावल, मछली, सूत आदि वस्तुएँ ढेरों एकत्र हो गयीं।

कहाँ तो शजीरा को दोनों समय का खाना कठिनाई से पैदा करना पड़ता था और कहाँ अब छोटे-से घर में सामान रखना कठिन हो रहा था।

एक दिन सीपी की राजकुमारी (अब लड़की को सब इसी नाम से पुकारने लगे थे) ने शजीरे से कहा, "देखो, घर में इतना सूत इकट्ठा हो गया है कि यदि तुम मुझे एक करघा बना दो तो मैं बैठी-बैठी कपड़ा ही बुन डालूँ।"

शजीरे ने कहा, "तुम मुझे कागज पर चित्र बनाकर दिखा दो, तो मैं करघा बना दूँगा।" परन्तु सीपी की राजकुमारी ने बहुत बड़े करघे की माँग की। शजीरा इतना लम्बा-चौड़ा करघा बनाने में हिचकिचा रहा था। उसे डर था कि इतने बड़े करघे पर बुना हुआ कपड़ा उतरेगा कैसे? परन्तु सीपी की राजकुमारी अपनी बात पर डटी रही।

आखिर शजीरा ने सीपी की राजकुमारी की इच्छानुसार करघा तैयार कर दिया।

सीपी की राजकुमारी दिन-रात कपड़ा बुनने में जुट गयी।

पूरे एक मास में सीपी की राजकुमारी ने सब सूत कात डाला। शजीरा इतना कपड़ा देखकर खुश भी हुआ और उदास भी। "इतने ऊँचे करघे से इतना बोझा उतरेगा कैसे?" शजीरा ने सीपी की राजकुमारी से पूछा।

अभी राजकुमारी कुछ उत्तर दे भी न पायी थी कि शजीरा के द्वार पर दस्तक हुई। वह भागकर किवाड़ खोलने गया। देखा, बाहर दो अजनबी औरतें खड़ी थीं। शजीरा के पूछने पर वे बोलीं, "हम दूर से आयी हैं और रात-भर यहाँ टिकना चाहती हैं। यदि आप अनुमति दें तो हम आज की रात आपके घर पर काट लें।"

शजीरा की बूढ़ी माँ भी अब तक द्वार पर पहुँच चुकी थी। बोली, "इस घर का द्वार सबके लिए खुला है। यदि आपको इस गरीब के घर में रात-भर ठहरने में कोई आपत्ति नहीं तो भला हमें क्या एतराज हो सकता है? आप बड़े शौक से अन्दर आइए और आराम कीजिए।"

दोनों औरतें शजीरा और उसकी बूढ़ी माँ के साथ अन्दर चली गयीं। शजीरा ने

S. Okubo

सीपी की राजकुमारी के साथ उनका परिचय कराया। दोनों औरतों की निगाह करघे पर चढ़े कपड़े पर गयीं। वह कपड़े की तारीफ करती हुई बोलीं, "आपको इतने भारी कपड़े को करघे से उतारने में तकलीफ होगी। आइए, हम दोनों आपकी सहायता कर दें। इस तरह हम भी आपके उपकार का बदला चुका पायेंगी।"

सीपी की राजकुमारी, शजीरा और दोनों स्त्रियों ने मिलकर करघे से कपड़ा उतार लिया और भली-भाँति कपड़े की तह भी लगा दी।

दूसरे दिन सुबह सीपी की राजकुमारी ने शजीरा से कहा कि इस कपड़े को नगर में ले जाकर बेच दो।

शजीरा बोला, "कितने पर बेच दूं?"

सीपी की राजकुमारी बोली, "तीन हजार सोने की मुहरों से कम नहीं लेना।"

"क्या कहा? तीन हजार सोने की मुहरें! इतनी कीमत कौन देगा?" शजीरा ने अपना सन्देह प्रकट किया।

सीपी की राजकुमारी बोली, "कोई-न-कोई अवश्य इस कपड़े को ठीक से पहचान सकेगा और इसका असली दाम देगा।"

शजीरा कपड़ा लेकर नगर के कपड़ा बाजार में जा पहुँचा। धूप में कपड़ा सोने की तरह चमक रहा था। जो भी उस रास्ते से गुजरता, कपड़ा देखे बिना न रह पाता। सब लोग कपड़े की बड़ी तारीफ कर रहे थे। पर इतनी बड़ी रकम कोई नहीं दे सकता था। अतः सब निराश होकर लौटते जा रहे थे। दिन छिप गया। सारा बाजार बन्द हो गया। जब मण्डी में कोई भी न रहा तो भारी मन से कपड़े को पीठ पर लादे शजीरा घर लौट चला।

'मैंने सीपी की राजकुमारी की बात मानकर शायद गलती की है। यदि कुछ कम दाम बताता तो कपड़ा बिक जाता। इतनी बड़ी रकम भला कौन देता?' इसी प्रकार अपने आपको कोसता हुआ वह चला जा रहा था।

"ऐ, क्या उठाये जा रहे हो? जरा रुको। हम भी देखें गट्ठर में क्या है?" शजीरा ने यह आवाज इस सुनसान में सुनी। पीछे मुड़कर देखा तो एक बड़े घोड़े पर लम्बे-चौड़े डील-डौल का एक दाढ़ीवाला व्यापारी बैठा था। उसके पीछे छोटे-छोटे घोड़ों पर कई और व्यक्ति भी थे। शायद उसके सेवक थे।

"महाराज, साधारण कपड़ा है। आप देखना चाहते हैं तो मैं दिखाने को तैयार हूँ।" यह कहते हुए शजीरा ने झट से गट्ठर कन्धे से उतारकर उस व्यक्ति के सामने खोल दिया। और गट्ठर खुलते ही कपड़े की चमक से रात का अँधेरा कम हो गया।

कपड़े को हाथ से परखते हुए व्यापारी बोला, "क्या लोगे इसका ?"

"हजूर, तीन हजार सोने की मूहरें"—डर के मारे शजीरा 'मुहरें' भी पूरी तरह न कह पाया।

"तीन हजार सोने की मुहरें ! बस, इतने ही···क्या कहीं भूलकर कम तो नहीं बता रहे ?"

"हजूर, इसका दाम ठीक तीन हजार सोने की मुहरें ही हैं।" शजीरा ने जरा हौसले से कहा।

"मेरे साथ मेरे घर तक चलो। मैं यह कपड़ा अभी मोल लेना चाहता हूँ।"

"हजूर, मैं चलने को तैयार हूँ। कितनी दूर तक जाना होगा ?"

"बहुत दूर नहीं। शीघ्र ही पहुँच जायेंगे।"

शजीरा उस व्यक्ति के साथ-साथ हो लिया। वह सोचता जा रहा था कि क्या यह सब स्वप्न है या सच ! जिस शहर में वह पहुँचा, उसके जगमगाते बाजार तथा भवन देखकर उसे स्वप्न का सन्देह होने लगा।

एक विशाल भवन के सामने खड़े होकर उस सेठ व्यापारी ने तीन बार तालियाँ बजायीं। तुरन्त ही तीन व्यक्ति बाहर आ गये। सेठ ने उन्हें आदेश दिया कि शजीरे के घर तीन हजार सोने की मुहरें पहुँचा दी जायें।

शजीरे का आश्चर्य बढ़ता ही जा रहा था। कुछ ही देर में उन तीनों व्यक्तियों ने सेठ से आकर कहा, "महाराज, आपकी आज्ञा का पालन कर दिया है। हम तीन हजार मुहरें शजीरा की बूढ़ी माँ को दे आये हैं।" इतना कहकर वह तीनों व्यक्ति वहीं लोप हो गये।

लौटने से पूर्व, सेठ ने शजीरा को कुछ 'साके' पिलायी। रात हो रही थी। घर लौटने में देरी होती देख वह बोला, "हजूर, अब आज्ञा चाहता हूँ।"

सेठ ने हीरे-जवाहरात से जड़ी एक सुराही शजीरा के हाथ में देते हुए कहा, "यह

छोटा-सा उपहार लेते जाओ। इसमें से एक प्याला मा... ... ...नी माँ को अवश्य पिला देना। वह फिर से जवान हो जायेगी और उसकी आयु और सौ... ...ढ़ जायेगी। उसकी सेवा हमेशा इसी प्रकार करते रहना। उसी की सेवा का फल तुम्हें मिल रहा है।"

सेठ की बात खत्म होते ही वहाँ एकदम धुआँ छा गया। देखते-ही-देखते शजीरा के अलावा वहाँ कुछ भी न रहा।

सपने जैसी इस घटना के बारे में सोचते-सोचते शजीरा गाँव पहुँच गया। पर यह क्या...उसके झोंपड़े की जगह सुन्दर महल खड़ा था! द्वार पर सीपी की राजकुमारी शजीरा की राह देख रही थी।

शजीरा को देखकर वह बोली, "मेरे वापस जाने का समय आ गया है। आज से तुम माँ-बेटे खूब सुख से रहो। तुम दोनों ने जो मुझे अपने घर इतने दिन रखा, यह उपकार मैं कभी नहीं भूलूँगी।"

शजीरा और उसकी माँ सीपी की राजकुमारी से सदा अपने साथ रहने का अनुरोध करने लगे, "इतनी गरीबी के दिन तुमने हमारे साथ काटे। अब इतना धन-दौलत पैदा कर तुम कहाँ लौट रही हो? मत जाओ। हम तुम्हारे विना कैसे रहेंगे। तुम्हारा इतना उपकार किस तरह चुकायेंगे? हमारी बात मान जाओ। हम हाथ जोड़ते हैं।" और दोनों माँ-बेटे हाथ जोड़कर उसके सामने खड़े हो गये।

सीपी की राजकुमारी का समय पूरा हो चुका था। अतः न चाहते हुए भी उसे अब लौटना अवश्य था। शजीरा और उसकी माँ को सीपी की राजकुमारी से विशेष लगाव हो गया था। पर वे मजबूर थे। इसी समय चकाचौंध पैदा करनेवाला प्रकाश हुआ। बादलों की एक घटा धरती की ओर आती दिखायी दी और सीपी की राजकुमारी को समेटकर आकाश की ओर ले गयी। सीपी की राजकुमारी बार-बार हाथ हिलाकर बुढ़िया और शजीरा के प्रति स्नेह प्रकट करती रही। नीचे, आँखों में आँसू-भरे मुँह उठाये दोनों माँ-बेटा हाथ जोड़े सीपी की राजकुमारी का बार-बार धन्यवाद करते रहे।

और यह सिलसिला दोनों ओर से तब तक जारी रहा जब तक कि राजकुमारी बादलों की गोद में पूरी तरह गुम नहीं हो गयी।

Acc. No. 78447
Date 22.3.92

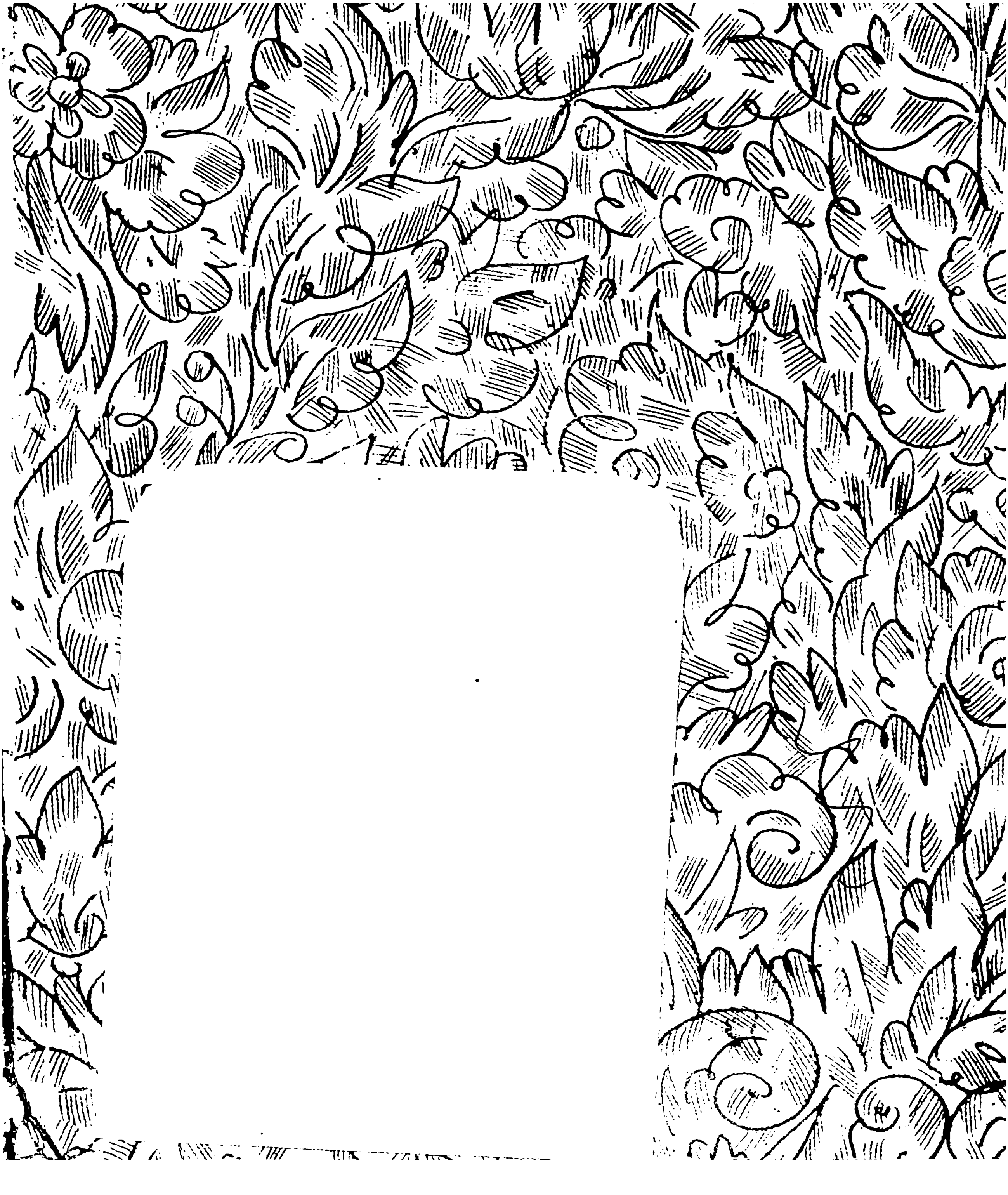

निप्पन देश की कहानियाँ-२

निप्पन देश है जापान का प्राचीन नाम, और ये कहानियाँ हैं इसी देश की लोककथाएँ।

लोककथाएँ चाहे जिस देश की हों, उनमें उस देश की मिट्टी में रसी-बसी संस्कृति का सोंधा-सलोनापन होता है। इस सन्दर्भ में ये कथाएँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इन सभी कहानियों में वहाँ के गाँव-वालों के रहन-सहन, तीज-त्यौहार, रीति-रिवाज़, और आपसी मेल-जोल की ऐसी मार्मिक छवियाँ हैं, जो इनसानी रिश्तों की गहरी पहचान कराती हैं,

इन कथाओं में मेहनतकश लोग हैं, वीर सैनिक हैं, समझदार जान-वर हैं, खूँख्वार राक्षस हैं, सुन्दर जलपरियाँ हैं, अच्छे बच्चे हैं, दयालु माँ-बाप हैं, और हैं वहाँ के घर-आँगन, पहाड़, जंगल, नदियाँ और वन-उपवन !

इनके अलावा इन कहानियों की एक और विशेषता है इनकी भाषा। सहज, सरल और मधुर। अत्यन्त आकर्षक चित्रों से सजी एक महत्त्वपूर्ण प्रेरणाप्रद बालोपयोगी कथा-पुस्तक।

Library IIAS, Shimla
H 028.5 Se 75 N
00078447

राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना